अनन्त सूर्य

१ मई, २०१८

आत्मीय पाठकगण,

एक सौ दस वर्ष पहले इसी माह में, भारत स्थित कर्नाटक के तटवर्ती क्षेत्र में बाबा मुक्तानन्द ने इस धरती पर जन्म लिया। और उनके जन्म के साथ ऐसी हज़ारों सम्भावनाओं का जन्म हुआ जो अब तक अज्ञात हैं; अनन्त सूर्यों का जन्म हुआ जो आगे चलकर बाबा जी की उपस्थिति के कारण और भी अधिक प्रखरता से चमकने वाले थे। बाबा जी की उपस्थिति के कारण पूरे विश्व में एक सार्वभौमिक संघम् का जन्म हुआ — यह संघम् ऐसे साधकों की संगत थी जिन्हें ज्ञान की, *सच्चे* ज्ञान की तलाश थी और वह ज्ञान न केवल उन साधकों के जीवन में एक श्रेयस्कर बदलाव लाने वाला था, बल्कि उन सभी के जीवन को भी समृद्ध करने वाला था जो उन साधकों के सम्पर्क में आए। बाबा मुक्तानन्द की कृपा, उनकी सिखावनियाँ, उनकी साक्षात् उपस्थिति ही इस ग्रह के लिए एक वरदान रही और इन सब के फल आज भी देखने को मिलते हैं।

ज्ञानेश्वर माहारज ने अपने श्रीगुरु, निवृत्तिनाथ की स्तुति में एक सुन्दर ओवी लिखी है जिसका अभी मुझे स्मरण हो रहा है। यह ओवी उसी भाव को अत्यन्त सुन्दरता से व्यक्त करती है जिसे निस्सन्देह वे सभी लोग महसूस करते हैं जो बाबा जी से प्रेम करते हैं और बाबा जी ने इस संसार को जो दिया, उसके विचार मात्र से अभिभूत हो जाते हैं। सन्तश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं,

> *श्रीगुरु को, चित् के उस सूर्य को, मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।*
> *उनकी स्तुति कर सकें, ऐसे शब्द हैं ही नहीं।*[१]

जैसे-जैसे हम बाबा जी के सौर जन्मदिवस, १६ मई की ओर बढ़ रहे हैं, उनके चान्द्र जन्मदिवस का पूर्ण चन्द्र ऐसा लग रहा है मानो वह ठहरा हुआ-सा है। अभी-अभी इसने आकाश की उस मखमली चादर

के पीछे पुनः छिपना शुरू ही किया है जिसमें से यह धीरे-धीरे बाहर झाँका था। बाबा जी के जन्म का माहात्म्य शब्दों में व्यक्त करना वास्तव में कठिन है। बाबा जी एक शक्तिपात गुरु थे; उनकी करुणा व कृपा से असंख्य लोगों को शक्तिपात दीक्षा प्राप्त हुई। इसके फलस्वरूप उन लोगों ने अपने अन्तर में वह अनुभव किया जो पहले उनके लिए केवल एक कल्पना मात्र रही होगी। उन्होंने भगवान की अनुभूति की; उन्होंने ऐसे सर्वव्यापी, ऐसे वास्तविक प्रेम की अनुभूति की जिसका वर्णन करने के लिए "अहैतुक" शब्द भी कम पड़ जाएगा।

और, बाबा जी चाहे, सत्संग में होते या अनौपचारिक बातचीत कर रहे होते, आश्रम में होते या फिर यात्रा पर, उन्होंने रात-दिन, साधकों को सिखाया कि कैसे वे अपनी सच्ची आत्मा की बार-बार अनुभूति करते रहें। बाबा जी ने उन लोगों को ध्यान करना सिखाया; यह सिखाया कि वे लोग स्वयं यह खोज करें कि उनकी आत्मा की शान्ति का वास कहाँ है और लोगों को उस शान्ति के साथ ऐसा सम्बन्ध स्थापित करना सिखाया जो उत्तरोत्तर बढ़ता जाए, गहरा होता जाए। इससे आगे चलकर अवश्य ही उन लोगों के ध्यान व सिद्धयोग की सिखावनियों के अध्ययन से प्राप्त फलों की तरंगें दूसरों तक फैल जातीं, जिसके परिणामस्वरूप स्वयं उन साधकों के लिए उन फलों में अधिक वृद्धि होती तथा उनके पुण्य अधिकाधिक बढ़ते। अतः यह एक पुण्यचक्र था जिसका सूत्रपात बाबा जी ने किया; और इससे साधुता का निरन्तर प्रसार होता गया व उसे दृढ़ता प्राप्त होती गई। ऐसा प्रताप था बाबा जी की 'ध्यान-क्रान्ति' का!

यद्यपि मैंने बाबा जी के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं किए, फिर भी मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि मैं *अवश्य ही* उन्हें जानती हूँ, कि मैं हमेशा से उन्हें जानती हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि जो लोग सच्चे दिल से बाबा जी को जानना और याद करना चाहते हैं वे सच में बाबा जी को जान सकते हैं और उन्हें याद कर सकते हैं। कुछ वर्ष पहले मैं येवला गई थी जो भारत के महाराष्ट्र राज्य में एक छोटा-सा गाँव है। बाबा जी ने कई वर्ष यहाँ साधना की। जब मैं वहाँ के सँकरें रास्तों से जा रही थी, हर चीज़ तीसरे पहर के सूर्य की स्वर्णिम आभा में नहाई हुई थी। मुझे याद है, उस समय मुझे महसूस हुआ था कि बाबा जी वहाँ *सचमुच हैं।* वह एहसास जितना सहज-स्वाभाविक था उतना ही रोमांचकारी व अनोखा भी। बाबा जी वहाँ की महकती हवा में थे और अस्त होते सूर्य में भी; वे स्वच्छ-निर्मल नीले आकाश में भी थे और उस मखमली आनन्द में भी जो मेरे हृदय में उमड़ रहा था। आज भी, जब मैं येवला से मीलों दूर हूँ, मुझे वे क्षण बड़ी स्पष्टता से याद हैं। जब मैं बाबा जी कहानियाँ पढ़ती या सुनती हूँ, उदाहरण के लिए, जब मैं उनकी सिखावनियों का अध्ययन करती हूँ, जब मैं उनका नाम गाती हूँ या उनके जीवन व उनके द्वारा

प्रदान की गई धरोहर पर मनन करती हूँ, तब मेरे मानसपटल और हृदय पर बनी उन स्मृतियों की छाप सहज ही जीवन्त हो उठती है।

पिछले माह के पत्र में मैंने लिखा था कि गुरुमाई जी के २०१८ के लिए सन्देश — 'सत्संग' का अभ्यास करते हुए इस वर्ष बाबा जी की उपस्थिति का उत्सव मनाने में कुछ विशेष और अद्‌भुत बात है। सत्संग उस सत्य का सान्निध्य है जो स्वाभाविक रूप से हमारे अन्दर विद्यमान है और जिसे हमारी सत्ता से अलग नहीं किया जा सकता; यह हर समय हमारी पहुँच के भीतर है, हम चाहे जो भी हों, चाहे किसी भी स्थान के हों, चाहे जैसे भी दिखते हों या हमारी आस्था जिस भी चीज़ में हो। जैसा कि गुरुमाई जी ने २०१८ के अपने सन्देश-प्रवचन में समझाया, यह *बिलकुल* वही है जो बाबा जी ने सिखाया, वैसे ही, जैसे बाबा जी से पहले महान सन्त-कवियों ने सिखाया था। यही है जिसे बाबा जी ने जिया। यही है जो उन्होंने संसार को दिया।

बाबा जी को हम सब में कितना विश्वास था; उन्हें विश्वास था, सत्य को जानने की हमारी क्षमता पर जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और उनकी सिखावनियाँ हमें प्रेरित करती हैं, बल्कि *ज़ोर देती* हैं कि हम भी अपने आप में उसी विश्वास को विकसित करें। हमारे पास बाबा जी का माह है — एक सुअवसर के रूप में, एक प्रेरणास्रोत, एक प्रोत्साहन के रूप में। अतः इस माह में, जब हम सत्संग का अभ्यास करने के लिए और भी अधिक दृढ़ता व निरन्तरता से स्वप्रयत्न कर रहे हैं तो इस बात पर सजगता से विचार करना उपयुक्त होगा कि हम और अधिक विश्वास व श्रद्धा के साथ सत्संग का अभ्यास कैसे करें। आख़िरकार, निरन्तर प्रयत्न का तानाबाना विश्वास के, श्रद्धा के धागे से बुना हुआ होता है। आगे का मार्ग भले ही *सीधा-सरल* न हो, फिर भी यह विश्वास ही है जो आगे बढ़ते रहने में हमारी सहायता करता है; हम अन्तर में जो खोज रहे थे उसे देखे हुए एक अरसा क्यों न बीत गया हो, यह विश्वास ही है जो हमें बार-बार अन्तर की ओर मोड़ता है।

और विश्वास केवल चुनौतीपूर्ण या अनिश्चितता के समय में हमें सहारा देने वाला साधन मात्र नहीं है। जब सब कुछ ठीक चल रहा होता है, जब हम अपने अन्तरंग के साथ जुड़ा हुआ अनुभव कर रहे होते हैं, तब भी, और उस समय विशेष रूप से, विश्वास हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। विश्वास हमें इसकी दृढ़ प्रतीति कराता है कि हमारे अन्तर-अनुभव में आगे *और भी* कुछ है, कि हमारे अन्दर *और भी अधिक* भगवान का प्रेम है जिसे हमें खोजना है और दूसरों के साथ बाँटना है। और विश्वास हमें निश्चितता के भाव से भर देता है कि हम उस प्रेम को खोज सकते हैं, और अवश्य खोज लेंगे।

तो फिर, आपका अपने आप में जो विश्वास है उसे आप मज़बूत कैसे बनाएँगे? ख़ासकर तब, जब विश्वास भी स्वयं परम सत्य की ही तरह अत्यन्त सूक्ष्म व नाज़ुक हो सकता है?

एक तरीक़ा है, क्षण भर रुककर पीछे मुड़कर देखना, तब भी, जब आप अपनी यात्रा में आगे बढ़ने की योजना बना रहे हों। आप वर्ष २०१८ के पाँचवें माह में प्रवेश कर रहे हैं और उसके साथ-साथ नववर्ष-सन्देश के अपने अभ्यास के पाँचवें माह में भी। सम्भव है कि अब आपकी समझ, आपका अनुभव व सत्य के साथ आपका सम्बन्ध वैसा नहीं है जैसा यह जनवरी माह में था। आपने अवश्य ही प्रगति की होगी। उसकी अभिस्वीकृति करना अर्थात् उसे मान्यता देना महत्त्वपूर्ण है। भले ही आपको यह तब न दिखा हो जब आपने शुरुआत की थी, फिर भी जब आप देखते हैं कि आप कहाँ तक पहुँचे हैं और किस प्रकार आपके द्वारा लिए हुए हर एक क़दम ने आपको एक अर्थपूर्ण स्थान पर पहुँचने में मदद की है, तब आपको समझ में आता है : "अरे वाह! मैं इसे *ज़रूर* कर सकता हूँ। मैं इतना आगे तक तो आ ही गया हूँ। मैं इससे और भी आगे जा सकता हूँ।"

इसके अलावा, आप अब तक हुए अपने कुछ अनुभवों को भी याद कर सकते हैं, सत्य की जो झलकियाँ आपको मिली हों, भले ही वे कितनी ही सूक्ष्म या विलक्षण क्यों न हों, आप उन्हें याद कर सकते हैं। ये अनुभव इसका प्रमाण हैं कि आपने प्रयत्न किए हैं। ये आपको विश्वास का, श्रद्धा का विकास करने में मदद करते हैं। ये अनुभव धीमे-से आपके कान में कहते हैं कि आप आगे बढ़ते रहें, इसी दिशा में बढ़ते जाएँ, और यह खोज लें कि आगे और क्या-क्या आने वाला है।

और यदि किसी कारणवश आपको लगे कि आप अपनी प्रगति को पहचान नहीं पा रहे हैं या आपको अब तक ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ है जिससे आपको प्रेरणा मिल सके तो कोई बात नहीं। अभ्यासों से आप हमेशा ही विश्वास को, श्रद्धा को पा सकते हैं। आपके पास दोनों प्रकार के अभ्यास हैं, नामसंकीर्तन, ध्यान व जप जैसे मूलभूत अभ्यास भी हैं और सत्संग का अभ्यास करने के आपके अपने तरीक़े भी हैं। बाबा जी की पुस्तक, *From the Finite to the Infinite [फ़्रॉम द फ़ाइनाइट टू दी इन्फ़िनिट]* में से एक अंश मुझे बहुत अच्छा लगता है। यह एक भक्त और बाबा जी के बीच एक वार्तालाप है। भक्त ने बाबा जी से पूछा कि यदि उसमें श्रद्धा और विश्वास न हों तो क्या इससे वह ध्यान में आत्मा के साथ नहीं जुड़ पाएगा। बाबा जी ने उत्तर दिया, "ध्यान करते रहो, श्रद्धा हो जाएगी, विश्वास आ जाएगा।"[२]

अतः हम पुनः पुण्यचक्र की संकल्पना पर वापस आते हैं। विश्वास और प्रयत्न परस्पर एक-दूसरे को दृढ़ करते हैं। आप आपनी आत्मा के साथ जुड़ने का, अन्तर में निहित सत्य के साथ सत्संग करने का जितना

अधिक प्रयत्न करेंगे, आपका विश्वास उतना ही अधिक प्रबल होता जाएगा। और आपका विश्वास जितना अधिक प्रबल होता जाएगा, उतने ही अधिक स्वाभाविक रूप से, सहजता और निरन्तरता से आप सत्संग करेंगे। यह ऐसा सिद्धान्त है जिसकी सादगी में ही इसकी सुन्दरता है। जी हाँ, यदि आपको अपनी आत्मा से सतत जुड़े रहने के मार्ग पर आगे बढ़ना है तो विश्वास होना ही चाहिए। तथापि, यह कोई पूर्वापेक्षा या शर्त नहीं है, यह कोई ऐसी बात नहीं है कि अपनी आत्मा से जुड़ने का प्रयत्न करने से पहले आपके अन्दर विश्वास का पूर्ण विकास होना ही चाहिए। बल्कि, विश्वास और प्रयत्न, एक-दूसरे में घनिष्ठता से गुँथे हुए हैं। वे एक-साथ मिलकर कार्य करते हैं और हमारे अन्तर में विकसित होकर, हमारे समक्ष हमें ही प्रकट कर देते हैं; वे बाबा जी के इन शाश्वत शब्दों में निहित सत्य को हमारी आँखों के समक्ष उजागर करते हैं, "आपका राम आपमें आप जैसा होकर रहता है।"

इस माह के दौरान सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर ऐसी कई चीज़ें होंगी जो आपको बाबा जी का सम्मान करने व उनका जन्मदिन मनाने में मदद करेंगी, और साथ ही गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश के अभ्यास को आगे बढ़ाने में भी आपके लिए सहायक होंगी। बाबा जी के जन्मदिवस महोत्सव के सम्मान में होने वाले सिद्धयोग ऑडिओ सत्संग के लिए यदि आपने अब तक पंजीकरण नहीं कराया है, तो मैं आपको आमन्त्रित करती हूँ कि आप यह पंजीकरण अवश्य कराएँ। इस सत्संग का शीर्षक है, "उसे देखो जो सबमें रहता है" — जो कि "सत्संग" के "सत्" के सन्दर्भ में है, उस सत्य के सन्दर्भ में है जो इस विश्वब्रह्माण्ड के समस्त विविध रूपाकारों को एक कर देता है।

इसके अतिरिक्त, आप वेबसाइट पर बाबा जी के बारे में और भी कहानियाँ पढ़ेंगे। हो सकता है कि इन कहानियों को पढ़ते-पढ़ते आपको बाबा जी के साथ घटे हुए *स्वयं अपने* प्रसंग याद आ जाएँ — बाबा जी से प्रत्यक्ष रूप में, ध्यान में या स्वप्न में आपको मिली सिखावनियों की स्मृतियाँ जाग जाएँ। जैसे-जैसे ये कहानियाँ आपको याद आती जाएँ, उन्हें लिखकर वेबसाइट को अवश्य भेजें [इसके लिए वेबसाइट पर एक लिंक दिया गया है]।

मई माह में अमरीका व भारत में तथा विश्व के अन्य कई भागों में मातृदिवस [Mother's Day] भी मनाया जाता है। सिद्धयोग पथ पर गुरुमाई जी व बाबा जी हमें सिखाते हैं कि हम दिव्य माता, महाकुण्डलिनी शक्ति की पूजा करें, जिसकी शक्ति साधक के अन्दर शक्तिपात दीक्षा द्वारा जाग्रत होती है। गुरुजन हमें यह भी सिखाते हैं कि हम सभी माताओं को अपना आदर अर्पित करें जिनका

ममताभरा कृत्य शुद्धतम प्रेम का प्रमाण है; यह वस्तुतः सद्गुणों का प्रकट रूप है जो उनके कृत्यों में झलकता है। इस वर्ष मातृदिवस १३ मई को है, अतः इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि इस समय वेबसाइट ज़रूर देखें!

तो, आप देख रहे हैं कि आगामी दिनों में कितना कुछ आने वाला है — वेबसाइट पर भी और हमारी साधना में भी। माई माह अपने में कितनी सम्भावनाएँ, कितनी सामर्थ्य लिए हुए है। या फिर ऐसा भी हो सकता है कि — वह सम्भावना, वह सामर्थ्य हममें ही हो! और इस ऋतु में जो भरपूर बहार छाई हुई है, चन्द्रमा की घटती हुई कला में हमें अब भी जो बाबा जी की मन्द-मन्द मुस्कान महसूस हो रही है और दिन का सतरंगा प्रकाश जो हमारे अन्दर बाबा जी की स्मृति को जगाता है, ये सब हमारे अन्दर की उस सामर्थ्य को, उन सम्भावनाओं को थोड़ा और प्रकट कर देते हैं।

मेरी शुभकामना है कि आपके लिए बाबा जी का यह माह चमचमाते उल्लास व आनन्द से भरपूर हो!

आदर सहित,

ईशा सरदेसाई

---

[१] ज्ञानेश्वरी १६.१७। स्वामी कृपानन्द द्वारा सम्पादित *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९९] पृ. २५६।

[२] *From the Finite to the Infinite,* द्वितीय आवृत्ति, [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९४] पृ. ३३२।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।